समकालीन
तीसरी दुनिया
महाशक्तियों के प्रभुत्ववाद के खिलाफ तीसरी दुनिया के प्रतिरोध का मुखपत्र

मूल्य ₹ 20.00 (भारत में)
रु. 30.00 (नेपाल में)
मार्च 2016

साबित करो
राष्ट्रविरोधी नहीं हो
और
बोलो
भारत माता की जय

एक भारत माता यह भी

सोनी सोरी पर तेजाब से हमला

तुम्हारा चेहरा
जामुन हो गया है सोनी
इसकी मिठास अब और बढ़ गयी है
इसका अर्क
असाध्य रोगों की अचूक दवा है
नहीं जानते हैं वे
जिन्होंने बना दिया है तुमको जामुन
तुम मत सोचना सोनी
चेहरा खराब हो गया है तुम्हारा
उस समाज की बेटी हो तुम
जिसमें कोई चेहरा बदसूरत नहीं होता
हम आदिवासी औरतों को यह सत्ता
सिर्फ देह से जानती है
या फिर लड़ाकू हौसले से
चेहरा हमारा
सदियों से सूर्पनखा है बहन
और इतिहास हमारी नाक
जिसे काटते रहते हैं मर्यादा पुरुषोत्तम
और उनके भाईबंद रिश्तेदार
तुम अब पहले से कहीं ज्यादा
फल उठी हो जामुन सी
देश के जंगल दहक रहे हैं
तुम्हारी जामुनी आभा से

तुम्हारे चेहरे का जामुनी रंग
बदल देगा व्यवस्था का कसैला स्वाद
देश का भविष्य मीठा होगा ही एक दिन
कह रहे हैं गांव
कह रहे हैं जंगल
कह रहा है हर जामुनी चेहरा

– वंदना टेटे

छत्तीसगढ़ की चर्चित सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता सोनी सोरी 20 फरवरी को ईशा और शालिनी नामक दो मानवाधिकार वकीलों से मिलने जगदलपुर आयी थीं। पुलिस के दबाव के कारण ये दोनों महिलाएं जगदलपुर छोड़कर जा रही थीं। रात के 9 बज चुके थे। अभी ईशा और शालिनी की बस का समय नहीं हुआ था लिहाजा सोनी सोरी अपने घर गीदम के लिए मोटर साइकिल से रवाना हो गयीं। रिंकी नामक एक लड़की मोटर साइकिल चला रही थी। गीदम से लगभग 20 कि.मी. पहले एक मोटर साइकिल पर तीन लड़के पीछे से आये और उन्होंने अपनी बाइक को सोनी सोरी की मोटर साइकिल के आगे रोक दी। तीनों लड़के तेजी से उतरे और एक ने रिंकी को पकड़ लिया और दो लड़कों ने सोनी को काबू में किया। धमकाते हुए कहा कि अगर मारडूम वाली घटना पर आवाज उठाना बंद नहीं किया और आई जी साहब के खिलाफ बोलती रही तो आज हम तुम्हारे मुंह पर केवल यह लेप लगा रहे हैं आगे तुम्हारी बेटी के साथ ऐसा करेंगे कि तुम कहीं मुंह दिखाने के लायक नहीं रहोगी। सोनी सोरी का चेहरा बुरी तरह जलने लगा था। उसे अस्पताल पहुंचाया गया। ताजा समाचार के मुताबिक एसिड मिश्रित जहरीले लेप का असर आंखों पर भी काफी पड़ा है। (संदर्भ : हिमांशु कुमार की रपट)

समकालीन
तीसरी दुनिया
मार्च 2016

संपादक मंडल
मंगलेश डबराल
राम शिरोमणि शुक्ल
रंजीत वर्मा
अभिषेक श्रीवास्तव

संपादक
आनन्द स्वरूप वर्मा

विशेष कला सलाहकार
बिभास दास

नेपाल प्रतिनिधि
नरेश ज्ञवाली

कला सहयोग
प्रमोद शर्मा

संपादकीय संपर्क:
क्यू-63, सेक्टर-12
नोएडा (गौतम बुद्ध नगर) पिन: 201301
फोन: 0120-4356504/9810720714
ई मेल : teesaridunia@yahoo.com
vermada@hotmail.com
वेब साइट: www.teesariduniya.com

एक प्रति: 20 रुपये (भारत में)
30 रुपये (नेपाल में)
वार्षिक: 200 रुपये
आजीवन: 3000 रुपये

आनंद स्वरूप वर्मा द्वारा क्यू-63, सेक्टर-12, नोएडा से प्रकाशित तथा सागर प्रिंट ओ पैक, बी-46, सेक्टर-5, नोएडा से मुद्रित।
पंजीकृत कार्यालय: 14, सुविधा बाजार, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110 023

इस अंक में

संपादकीय

देशभक्त बनाम देशद्रोही		4

आवरण कथा

जेएनयू प्रकरण: रोहित से लेकर कन्हैया तक	**अभिषेक श्रीवास्तव**	7
एबीवीपी पदाधिकारियों का इस्तीफा		11
जनेवि छात्र संघ के अध्यक्ष कन्हैया का भाषण		13
मोदी सरकार ने लोकतंत्र को खतरा पैदा किया	**प्रताप भानु मेहता**	16
स्मृति ईरानी के नाम पत्र	**अनंत प्र. नारायण**	18
जेएनयू उपकुलपति के नाम पत्र	**प्रो. चमन लाल**	19
ज़ी न्यूज से इस्तीफा क्यों दिया	**विश्व दीपक**	23
उमर खालिद के नाम खुला पत्र	**स्वरा भास्कर**	26
उमर खालिद, मेरा बेटा	**अपूर्वानंद**	29
जेएनयू, फासीवाद, मधेस और काठमांडो	**झलक सुबेदी**	31

कविता

दो कविताएं	**बर्तोल्त ब्रेख्त/ महमूद दरवेश**	34

दस्तावेज

राइग्स्टाग (जर्मन संसद) में आगजनी की घटना		36
ग्राम्शी, फासीवाद और हमारे लिए सबक	**एजाज़ अहमद**	41

विश्व

यूरोपीय फासीवाद की वापसी	**ली ब्राउन**	52

मीडिया

जेएनयू प्रकरण और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया		55

देशभक्त बनाम देशद्रोही

एक भयावह माहौल निर्मित किया गया है। समूचे देश को दो खानों में बांटने की साजिश चल रही है-देशभक्त और देशद्रोही। बीच की कोई जगह नहीं है। कानून की परिभाषा बदल दी गयी है। अब तक यह होता था कि जब तक आप दोषी न साबित कर दिए जाएं, निर्दोष हैं। लेकिन अभी दिल्ली के पुलिस कमिश्नर बस्सी ने एक नयी बात कही कि आपको पकड़ लिया गया है, अब आप साबित करें कि निर्दोष हैं। 15 फरवरी को पटियाला कोर्ट हाउस में जिन वकीलों और वकीलों की पोशाक में जिन गुंडों ने छात्र संघ के अध्यक्ष कन्हैया को पुलिस की मौजूदगी में अदालत परिसर के अंदर पीटा उन्होंने कैमरे पर दावा किया कि हमने उसे मजबूर कर दिया कि वह भारत माता की जय बोले। अगले दिन 'देशभक्तों' के एक प्रदर्शन के दौरान एक टेलीविजन न्यूज की पत्रकार को प्रदर्शन का नेतृत्व करने वालों ने पूछे गए सवाल का जवाब देने की बजाय पकड़ लिया और कहा कि भारत माता की जय बोलो। अगर आप देशद्रोही नहीं हैं तो आपको साबित करना पड़ेगा और सबूत के तौर पर भारत माता की जय या वंदे मातरम बोलना पड़ेगा। 23 फरवरी को लातूर (महाराष्ट्र) में एक पुलिस सबइंस्पेक्टर को इसलिए बुरी तरह पीटा गया क्योंकि उसने भगवा झंडा फहराने से इनकार किया और उसे प्रदर्शनकारियों ने तभी छोड़ा जब उसने भगवा झंडा फहरा दिया। आए दिन इस तरह की घटनाएं हो रही हैं और यह सारा कुछ सरकार और पुलिस प्रशासन की नाक के नीचे हो रहा है। असहमति का दायरा इस हद तक सिकुड़ गया है कि आपको यह घोषित करना पड़ेगा कि आप सत्ता के साथ हैं या सत्ता के खिलाफ हैं। केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कुछ समाज विरोधी तत्वों ने भारत के खिलाफ और पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाए। प्रदर्शन के वीडियो देखने से साफ पता चलता है कि कपड़ों से अपने चेहरे को ढके हुए तकरीबन आठ नौ लोग ये नारे लगा रहे थे लेकिन देशद्रोह का आरोप लगाकर वहां के छात्र संघ के अध्यक्ष कन्हैया को गिरफ्तार किया गया जो इन पंक्तियों के लिखे जाने तक जेल में पड़ा है। सरकार के इशारे पर काम कर रहे कुछ चैनलों ने एक फर्जी वीडियो जारी किया जिसके आधार पर पुलिस ने सारा मामला तैयार किया। पूरे देश में इन चैनलों ने और खास तौर पर ज़ी-न्यूज ने एक ऐसा उत्तेजक माहौल बनाया जिससे जनेवि के छात्रों को खलनायक के रूप में चित्रित किया जा सके। निश्चय ही विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों ने अफजल गुरु की फांसी की तीसरी बरसी पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया था लेकिन अफजल गुरु की फांसी पर सवाल उठाना उचित है या गैर कानूनी, इस पर हम आगे विचार करेंगे। मुख्य सवाल यह है कि जब यह बात सामने आ गयी कि कन्हैया के कथित नारे वाला वीडियो फर्जी था और असली वीडियो में कन्हैया बिल्कुल अलग नारे लगा रहा है, इसके बाद भी उसे जेल में क्यों रखा गया। इतना ही नहीं सारी स्थितियां साफ हो जाने के बावजूद भाजपा और आरएसएस के नेता बार-बार इस झूठ को ही क्यों दुहरा रहे हैं कि जेएनयू के छात्रों ने राष्ट्र विरोधी नारे लगाए। आखिर क्या वजह है कि हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के दलित शोध छात्र रोहित वेमुला की (आत्म) हत्या के बाद देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में और खास तौर से जेएनयू में एक उथल-पुथल का माहौल बना? रोहित वेमुला प्रकरण ने न केवल केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी और एक अन्य केंद्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय को कटघरे में खड़ा कर दिया बल्कि भाजपा और संघ नेतृत्व की ब्राह्मणवादी सोच से भी नकाब हटा दिया। इन दोनों मंत्रियों ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर पर इतना दबाव डाला कि उन्होंने रोहित की न केवल फेलोशिप बंद कर दी बल्कि उसे निलंबित भी कर दिया। हर तरह से अपना पक्ष रखने के बाद निराशा हाथ लगने पर रोहित ने आत्महत्या का रास्ता चुना। जेएनयू के छात्रों की भावनाओं को स्वर देते हुए कन्हैया ने अपने भाषण में रोहित का जिक्र करते हुए जोरदार शब्दों में कहा था कि हम नहीं चाहते कि जेएनयू में भी कोई दूसरा रोहित आत्महत्या के लिए मजबूर हो। यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि 10 लड़कों के जिस समूह ने अफजल गुरु से संबंधित आयोजन किया था उसमें कन्हैया शामिल नहीं था। सारे तथ्यों से स्पष्ट हो जा रहा है कि कन्हैया को सत्ता द्वारा बलि का बकरा बनाया जा रहा है ताकि जेएनयू के खिलाफ मोदी सरकार अपनी योजनाओं को लागू कर सके। ऐसा कहने का आधार यह है कि अफजल गुरु से संबंधित घटना 9 फरवरी 2016 की है लेकिन 8 नवंबर 2015 को प्रकाशित राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के हिंदी मुखपत्र 'पांचजन्य' की आवरण कथा देखी जानी चाहिए जिसका शीर्षक था: 'जेएनयू: दरार का गढ़'। इस रिपोर्ट में विस्तार से बताया गया है कि किस तरह 'जेएनयू नक्सलियों और राष्ट्र विरोधी तत्वों' का अड्डा बनता जा रहा है। लेख में एक जगह कहा गया है कि 'जेएनयू को वामपंथियों का गढ़ कहा जाता है। भारतीय संस्कृति को तोड़-मरोड़कर गलत तथ्यों के साथ प्रस्तुत करना यहां आम बात है...यहां के लोग तमाम तरह की देश विरोधी बातों की वकालत करते हैं। यहां के 'बुद्धि के हिमालयों' को सिर्फ एक ही बात समझाई और घुट्टी में पिलाई जाती है कि कैसे भारतीय संस्कृति